है । अप्रार्थी ने अनुसार परम्परा व रीति रिवाज के अनुसार अप्रार्थी सज्जादानशीन के प्रतिनिधि व परिवार के सदस्य द्वारा अपरिवर्जनीय परिस्थितियों में उसके पद का कार्य करवाया जा सकता है । यदि राज्य सरकार के किसी आदेश का उल्लंघन हो तो राज्य सरकार अथवा राज्य सरकार द्वारा अधिकृत व्यक्ति आवश्यक कार्यवाही कर सकता है । इस प्रकार प्रार्थी के अभिकथन व तर्क अपने आप मे अपूर्ण हैं एवं अस्पष्ट हैं । इसके विपरीत अप्रार्थी ने समुचित उत्तर प्रस्तुत किया है । उपरोक्त विवेचन के आधार पर प्रार्थी का कोई प्रथम दृष्टया मामला नहीं बनता है । जब प्रार्थी अपना प्रथम दृष्टया मामला ही साबित नहीं कर पाया है तो वह अस्थाई स्यादेश का अनुतोष प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है ।

4. अत: वादी-प्रार्थी का यह आवेदन निरस्त किया जाता है ।

आदेश लिखाया जाकर आज दिनांक 25/9/82 को खुले न्यायालय में सुनाया गया ।

(राजेन्द्र पाल सिंह)
मुंसिफ एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट, अजमेर नगर
(पश्चिम) अजमेर

4/4/87

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

14/A

न्यायालय श्रीमान् मुंसिफ अजमेर शहर (पश्चिम) अ ज मे र

====

दीवानी वाद संख्या -------- सन् 1978

====

सैयद खालिद मोहनी वालिद श्री सैयद ज़ैनुल आबेदीन खादिम ख्वाजा साहिब, मोहनी मंजिल, खादिम मोहल्ला, अजमेर ।

---- वादी

बनाम

दी दरगाह कमेटी अजमेर ।

---- प्रतिवादी

====

जवाब दावा अन्तर्गत आदेश 8 नियम 1 व्यवहार प्रक्रिया संहिता

====

उपरोक्त प्रतिवादी की ओर से निम्न निवेदन है :-

1- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 1 मौजूदा स्थिति में गलत होने के कारण अस्वीकार है । प्रतिवादी एक बोडी कोरपोरेट है, न कि संयुक्त संस्था, जैसा कि वाद के इस च. 1 में अंकित किया गया है ।

2- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 2 के जवाब में निवेदन है कि दरगाह ख्वाजा साहब अजमेर न केवल मुसलमानों बल्कि सब धर्म के अनुयायियों का पवित्र स्थान है और प्रतिवादी दरगाह ख्वाजा साहिब अधिनियम 1955 के अन्तर्गत इस पवित्र स्थान का प्रबन्ध व देखभाल करती है ।

3- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 3 दरगाह ख्वाजा साहब अधिनियम 1955 के प्रावधानों से सम्बन्धित है और इस अधिनियम के प्रावधान ही सही स्थिति स्पष्ट करेंगे ।

4- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 4 के उत्तर में निवेदन है कि प्रतिवादी ने श्री सैयद ज़ैनुल आबेदीन अली खाँ को इन्टरीम सज्जादा नशीन मुकर्र किया था तथा राज्यपाल राजस्थान ने उक्त

Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

इन्टरीम सज्जादानशीन की नियुक्ति का अनुमोदन किया है ।

5- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 5 में वर्णित तथ्य कि दिनांक 11 दिसम्बर 76 को राजपत्र भारत सरकार के द्वारा सज्जादानशीन की नियुक्ति के लिये आवेदन पत्र मांगे गये थे, सही है ।

6- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 6 गलत रूप में वर्णित होने के कारण अस्वीकार है । राज्य सरकार द्वारा पारित आज्ञा संख्या एफ-21{21}रेव/1/75 तो केवल प्रतिवादी द्वारा नियुक्त इन्टरीम सज्जादानशीन की नियुक्ति का अनुमोदन करती है । इन्टरीम अथवा स्थाई सज्जादानशीन नियुक्त करने का अधिकार तो केवल प्रतिवादी कमेटी को है ।

7- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 7 गलत होने के कारण अस्वीकार है । इस चरण में अंकित आरोप बहुत ही अस्पष्ट {वेग} होने के कारण भी अस्वीकार है । प्रतिवादी अथवा उसके किसी प्रतिनिधि व नौकर ने दिनांक 29-9-78 व 19-10-78 को किसी भी अनाधिकृत व्यक्ति को सज्जादानशीन के कार्य करने के लिये अधिकृत नहीं किया । श्री अलाऊद्दीन उर्फ आरिफ सुपुत्र श्री इलमुद्दीन मौजूदा इन्टरीम सज्जादानशीन के छोटे भाई है । अपर वर्णित आज्ञप्ति की अवहेलना इस प्रतिवादी द्वारा किये जाने के आरोप गलत व बेबुनियाद है । आम मुसलमानों द्वारा ऐतराज किये जाने तथा उन्हें धक्का लगने के आरोप भी बिल्कुल मनगढंत, मिथ्या व गलत होने से अस्वीकार है ।

8- यह कि वाद पत्र की चरण संख्या 8 में वर्णित आरोप जिस स्थिति में वर्णित है वह गलत होने के कारण अस्वीकार है ।

9- यह कि वाद पत्र की चरण संख्या 9 में वर्णित आरोप जिस स्थिति में लगाये गये है, वह अस्वीकार है । स्थायी सज्जादानशीन की नियुक्ति का प्रश्न माननीय उच्च न्यायालय राजस्थान के अधीन विचाराधीन है । वादी का यह कहना कि प्रतिवादी यदि सज्जादानशीन का कार्य करवाये तो उसे कोई आपत्ति नहीं तर्कहीन व गलत होने से अस्वीकार है ।

10- यह कि वाद पत्र का चरण संख्या 10 गलत व गैर-कानूनी होने के कारण अस्वीकार है । वादी को वाद का कारण कभी भी प्राप्त नहीं हुआ है ।

11- यह कि वाद पत्र की चरण संख्या 11 न्याय शुल्क की अदायगी व क्षेत्राधिकार से सम्बन्धित है । वाद का मुल्यांकन न्याय शुल्क कम किया गया है क्योंकि अनुतोष संख्या 12{1} घोषणा पर कोई भी न्याय शुल्क अदा नहीं किया गया है । निषेधाज्ञा व घोषणा के अनुतोषों पर अलग-अलग न्याय शुल्क आवश्यक है ।

12- यह कि वाद पत्र की चरण संख्या 12 अनुतोष से सम्ब है और वादी कोई अनुतोष प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है मय खर्चे खारिज होने योग्य है ।

अतिरिक्त अभिवचन
==============

13- यह कि वादी को यह वाद प्रस्तुत करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वादी के किसी भी अधिकार पर कोई भी आघात इस वाद पत्र में प्रतिवादी द्वारा पहुंचाना अंकित नहीं है केवल काल्पनिक आधार व धार्मिक भावनाओं पर घोषणा व स्थायी निषेधाज्ञा प्राप्त करने का वाद नहीं लाया जा सकता है ।

14- यह कि प्रतिवादी के विरूद्ध यह वाद श्री जेनुल आबेदीन इन्टरीम सज्जादानशीन की अनुपस्थिति में चलने योग्य नहीं है वह इस वाद में आवश्यक पक्षकार है ।

15- यह कि यह वाद धारा 92 सि0प्र0सं0 के प्रावधानों के अनुसार भी मौजूदा स्थिति में चलने योग्य नहीं है ।

16- यह कि सदियों से यह परम्परा व रिती रिवाज चला आ रहा है कि सज्जादानशीन अपरिवर्जनीय {अनअवोइडेबल} परिस्थितियों में अपने पद का कार्य अपने प्रतिनिधि व परिवार के सदस्यों के द्वारा कराता आ रहा है । भूतपूर्व सज्जादानशीनों द्वारा भी समय समय पर उनके पद का कार्य उनके प्रतिनिधि या परिवार के सदस्यों द्वारा करवाया गया था । इस परम्परा व रीति-रिवाज पर किसी भी मुस्लिम धर्मावलम्बी ने कभी भी कोई आपत्ति नहीं की है ।

17- यह कि दरगाह ख्वाजा साहब एक्ट 1955 के अन्तर्गत प्रतिवादी सज्जादानशीन के लिये नियुक्ति अधिकारी {अपोइंटिंग ओथोरिटी} है और अपरिवर्जनीय परिस्थितियों {अनअवोइडेबल

Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features
PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.

सरकमस्टान्सेज) में किसी भी व्यक्ति से सज्जादानशीन के पद क
करवा सकती है । प्रतिवादी द्वारा ऐसा करने में वादी या कि
अन्य मुस्लिम व्यक्ति को धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचने का
पैदा नहीं होता है । यह कार्य मुसलिम विधि के भी अनुरूप है

18- यह कि वाद सिविल नेचर का नहीं है । अत: सिवि
प्रक्रिया संहिता की धारा 9 के अधीन यह वाद इस न्यायालय
चलने योग्य नहीं है ।

19- यह कि आवश्यक पक्षकार श्री ज़ैनुल आबेदीन इन्टरी
सज्जादानशीन की अनुपस्थिति में यह न्यायालय प्रतिवादी के वि
कोई भी न्याय संगत व प्रवर्तनीय आदेश पारित नहीं कर सकता है ।

20- यह कि वादी द्वारा जो घोषणा प्राप्त करने का अनुतोष
मांगा है वह स्पेसिफिक रिलीफ एक्ट की धारा 34 के प्रावधानों के
अनुरूप वाद में उसे प्रदान नहीं किया जा सकता है । घोषणा का
अनुतोष प्राप्त करने के लिये वादी के किसी कानूनी अधिकार का हनन
होना आवश्यक है जो कि वादी ने अपने सम्पूर्ण वाद पत्र में कहीं भी
अंकित नहीं किया है ।

21- यह कि वादी स्थायी व अस्थायी निषेधाज्ञा का अनुतोष भी
स्पेसिफिक रिलीफ एक्ट के प्रावधानों के कारण प्राप्त नहीं सकता है

22- यह कि यह वाद मय विशेष खर्चे सहित खारिज होने योग्य है।

अत: माननीय न्यायालय से निवेदन है कि वादी के इस
वाद को मय विशेष खर्चे खारिज करने की आज्ञा प्रदान करें जो न्याय
संगत होगा ।

अजमेर,
दिनांक जनवरी 25 ,1979

नाज़िम
दरगाह कमेटी अजमेर

स त्या प न

मैं, एम० ए० खां, नाज़िम दरगाह कमेटी अजमेर वर
आफ अटोर्नी होल्डर श्री एस०ए०एम० ईशाक, प्रेसीडेन्ट, दरगाह कमेटी,
अजमेर यह सत्यापित करता हूं कि जवाबदावा के मद संख्या 1 से 22
में वर्णित तथ्य मेरे द्वारा दरगाह आफिस से प्राप्त सूचना पर आधारित
होने के कारण सही व सत्य है तथा अंतिम चरण अनुतोष है ।

अजमेर,
दिनांक जनवरी 31 ,1979

नाज़िम
दरगाह कमेटी, अजमेर

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

786

On His Holiness Hazrat Khwaja Moinuddin Hasan Chishty's (R

(Dedicated to the Cause of Peace, Harmony & Love of the Man

Office of the

Successors Great Grand Son & Hereditary Sajjadanashin (Ga

Hazrat Khwaja Moinuddin Hasan Chishty (R.A.) A

Qadeem Haveli D
Dargah Bazar, Ajmer - 305

Ref. No. SAS/175-XVI/THU-MEHF/BRO-SO/1-98 Dated 9.9.1998

To

The Nazim
Dargah Khwaja Sahib
Ajmer.

Reference :- Your letter No.DKS/98/SN/7-97 dated 16.07.1998 regarding presiding of religious Mehfils and other religious ceremonies at Dargah Shareef, Ajmer.

(1). In this connection I would like to inform you that the issue of presiding of Religious Mehfils and other Ceremonies in absence of Holy Sajjadanashin Sahib at Dargah Shareef Ajmer were raised earlier also and various Courts had delevered its Judgments in the past over this issue on the basis of past practice Customs and Traditions, Usages and regulations and also established rituals, ceremonies in accordance with the tenent (Chishtiya Saint) and also that correct position and real legal position of Holy Sajjadanashin Sahib recognised by Mughal Emperors British Government ,Law of Land ,Present Government and Dargah Committee,Ajmer

(2). I would like to quote a few Judgments of different Courts over this issue to make you clear that nothing is being done against the tenent of Chishtiya Sact.

(a). I would like to draw your attention towards Regular Appeal No. 7 of 1870 between Meer Hafeez Ali son of Meer Aziz Ali, Mutawalli of Dargah Khwaja Sahib Ajmer Versus Qazi Muniruddin and Shafi Hussain Guardian of Dewanji Syed Ghyasuddin Ali Khan in the Court of the Commissioner Ajmer Division in which it has clearly been upheld the Judgment of the Lower Court that "Quote"!

"With regard to the proper person to act in case of the absence of the Mutawalli it has been already decided by Lt. Colonel Davidson in his Robekary of the 22nd April 1862 that in case of the absence from the Mehfil of either the Dewanji or Mutawalli the brothers or Sons attend. This is also according to Eastern Custom and in neither instance would illegible be permitted to attend who is a mere servant of the person appointing him and who may have no connection with the Shrine and may indeed be of another religion."Unquote"

Thus it is clear that this issue has already been decided by the competent Court. Further the said Judgment was Exhibited as Exhibit No. 28/1 by the Dargah Committee, Ajmer in Civil Suit No. 1 of 1942 between Syed Asrar Ahmed Mutawalli of the Dargah Ajmer Versus Dargah Committee, Ajmer in the Court of District and Session Judge Ajmer.

(b). The same issue was cropped-up again in the Court of Munshi Ameen Chand Sahib Bahadur Judicial Extra Assistant Commissioner Ajmer Merwara vide their Judgment dated 26.4.1854, 30.8.1859 and 25.5.1873 in which it has also upheld that in absence of Holy Sajjadanashin Sahib their Brothers and Sons can preside the Religious Mehfils and Ceremoniesin the Dargah Shareef Ajmer.

(c) That in Civil Suit No. 139 of 1918 between Syed Shahabuddin Versus Dargah Committee Ajmer and others in the Court of Sub Judge First Class Ajmer before Hon'ble Sahibzada Abdul Wahid Khan , that in the

PTO 2

Committee, Ajmer) This Case was lastly tried before Hon'ble Privy Council London and in his Judgen 29th July 1946 vide its Para No. 12 upheld above version dated 5th April 1856. "

(6). In the said Civil Suit No. 1 of 1942 Exhibit D/36 and D/37 that Copy of direction by Akber and various powers held by Holy Sajjadanashin Sahib and " According to Shariyat also the Saij has been conferred Hereditary right and powers by his Majesty since ancient times Shugga of His Ma Exhibited by the Dargah Committee, Ajmer that a part from in respect of all matters property, appointment and dismissal of Servants, Khadims andShagird-pesha,appointment and collection, gra stopping rozina etc.: which he shall still continue to possess."

(7). So, as per Shariyat, Sanad, Farmans,Orders/Directions of various highest Judicial Authorities a Judgements of Highest Court of the land i.e: Supreme Court of India and Privy Council London are The Holy Sajjadanashin Sahib is the Supreme authority in relation to the religious Matters of Darga Sahib Ajmer. It will not be out of place to remind you that Dargah Committee was constituted to r office of Mutawalli who was managing the Dargah affairs. Thus it is improper to question the Sajjadanashin Sahib as evident from the Supreme Court. Judgement quoted above.

(8). The Resolution adopted by the Dargah Committee, Ajmer on 22.4.1974 stand infructuous because the Resolution was adopted when there was an interim arrangement of Sajjadanashin to perform the Religious functions at Dargah Shareef, Ajmer. On 8.7.1975 Dewan Syed Ilmuddin Ali Khan II took charge of the Hereditary Office of Sajjadanashin on the basis of the Judgement of Hon'ble High Court Rajasthan on permanent basis. After his death his eldest son Dewan Syed Zainul Abedin Ali Khan Succeed the Hereditary post of Sajjadanashin. Further various Courts judgements and discussion in Parliament while passing the Dargah Khwaja Sahib Act 1955 do not permit the Dargah Committee Ajmer to change the Status of Sajjadanashin Dargah Shareef Ajmer.

It is once again reiterated that as per above factual position you should not write such irresponsible letter to Holy Sajjada Nashin Saheb who is |Great grand -Son of Hazrat Khwaja Moinuddin Hassan Chishty (R.A.) and also the religious head of Dargah Shareef Ajmer. It would be appreciated that you seek advice in person for the improvement and batter management of Dargah affairs rather to waste time in the affairs not concerned to you.

With good wishes.

Yours Sincerely

(Syed Alauddin Arif Advocate)
Secretary
Dewan Dargah, Ajmer

Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features
PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.

Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features
PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.

absence of Holy Sajjadanashin Sahib the family members nominated by Sajjadanashin or in abse members even the SAFA (TURBAN) of the Holy Sajjadanashin Sahib may be sent in Order t religious ceremonies in the Mehfil and other Religious Functions.

(d). In the Court of Munsif Magistrate (West) Ajmer a case No. 89 of 1978 was filed by Syed Versus Dargah Committee, Ajmer.That the then Nazim (Shri Mehmood Ali Khan)Dargah Khwaja filed in his Written Statement dated 25.1.1979 had admitted in Para No. 16 of Additional Plea that and as per past practice Customs and Traditionsthe Holy Sajjadanashin Sahib is empowered to se members to preside /perform religious Mehfils in Dargah Shareef,Ajmer .

The Hon'ble Munsif Magistrate (West) Ajmer in his Judgment dated 25.9.1982 dismissed and upheld that since decades it has been a tredition that in absence of Sajjadanashin his family preside/perform all religious ceremonies and functions at Dargah Shareef.Ajmer.

(3). In the light of the above Court Judgments delivered by various comptent Courts you will agree that your letter is a voilation of said Judgments and rather it will be appropreate to say that this is nothing but dishonour of the Judgments delivered by the Hon'ble Courts and any attempt by Dargah committee, Ajmer over this issue would amount to contempt of Court so I am confident that the said letter will be withdrawn with due appology so that the various Judgments cited above stand honoured.

(4). In your seconed Para of the said letter you have quoted Section 11(h) of Dargah Khwaja SahibAct No. 36 of 1955 which is not relevent on the subject matter because Section 11(h) is required to be read in the light of the Mandatory Provision of Section 15 of Dargah Khwaja Sahib Act 1955 accordingly Dargah Committee,Ajmer should follow the Rules of Muslim Law applicable to Hanafil Muslims in India and shall conduct and regulate the establised rites and ceremonies in accordance with tenents of the Chishty Saint So far Dargah Khwaja Sahib is concerned Holy Sajjadanashin Dargah Shareef Ajmer is a Greatgrand-Son of Hazrat Khwaja Moinuddin Hasan Chishty (R.A.) and all the religious functions and ceremonies are being presided by him as per Muslim Law applicable to Hanafi Muslims in India and according to Law the Holy Sajjadanashin Sahib is the only dignity who can regulate all religious matters in regard to Dargah Khwaja Sahib,Ajmer,as well as other religious places and hence Dargah Committee,Ajmer is not suppose to interfere in the Muslim Law and religious ceremonies rather to help in the performance ofreligious functions/ceremonies.Holy Sajjadanashin Sahib is the religious head of Dargah Shareef Ajmer whereas Dargah Committee Ajmer is only and exclusively a management body of Dargah affairs. It is not out of place to mention here and draw your kind attention towards the Judgment of the Hon'ble Supreme Court of India dated 8.9.1987 vide Para No. 19 and 20 between Syed aSaulat Hussain Versus Syed Ilmuddin and others. Dargah Committee, Ajmer was also one of the party which are as under :-

"(19). It is clear, therefore, that the nature of the office and the rule of Succession to it always remained undisputed. It was occupied by a Hereditary Descendant of the SAINT. That was perhaps the reason for not asking the High Power Committee constituted by the Government of India in 1949 to enquire into it. The said Committee was constituted only to enquire into the mal-administration of the Dargah and suggest remedies in the interest of devotees. The question of Succession to the office of Sajjadanashin was expressly kept out side its purview. It would be evident if one peruses the terms of reference made to the High Power Committee.

(20). The Government of India had also recognised that Sajjadanashin has always been a descendant of the Saint and that position should not be disturbed. This has been reflected from the speech of the Home Minister in the Parliament while piloting the Khwaja Sahib Bill which latter became the DKS Act. This is what the Home Minister stated (Lok Sabha Debate Pt.II Vol.V 25th July 13 Aug., 1955 P.9391):

"So far as Sajjadanashin is concerned he is a religious office. He is the descendant of the Khwaja Sahib and therefore his position should be kept as it is and that position is not affected at all. Because he deals with the ritual he deals with the Spiritual side of management and so far as that is concerned it is entirely left to him."

(5). Further a dispute had arisen over the Status and powers of Sajjadanashin and Mutawalli and after going through the Muslim Law in India the Hon'ble Commissioner of Ajmer-Merwara State passed an Order dated 5th April 1856 in File No. 573 of 1853, that quote" the Mutawalli of the Dargah has claimed to be equal in Status to the Dewanji. This cannot be. It is always proper for the Mutawalli Dargah to be respectful to the Dewanji, because the Dewanji is the Grand-son of Khwaja Sahib while the Mutawalli of Dargah Khwaja Sahib is an employee of the Government and should pay respect to the Dewanji then other persons. Therefore a Parwana should be sent to the Mutawalli Dragah asking him to respect of Dewanji as has been the practice before (reference Exhibit D/51 in the Civil Suit No. 1 of 1942 between Asrar Ahmed Versus The Dargah

PTO. 3

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

[illegible]

[illegible]	[illegible]	تعداد زر دعوی	نام مدعا علیہ	نام مدعی
[illegible]	[illegible]	روپیہ / آنہ / پائی	[illegible]	[illegible]

فیصلہ [illegible]

[illegible]	تعداد زر ڈگری	[illegible]	[illegible]	تاریخ فیصلہ
[illegible]	روپیہ / آنہ / پائی	[illegible]	[illegible]	[illegible]

JUDICIAL ... SMALL CAUSE ... AJMERE

True copy
[illegible] Nath
Clerk of Court

COURT FEE
GOVERNMENT OF INDIA
SIX ANNAS

COURT FEE

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

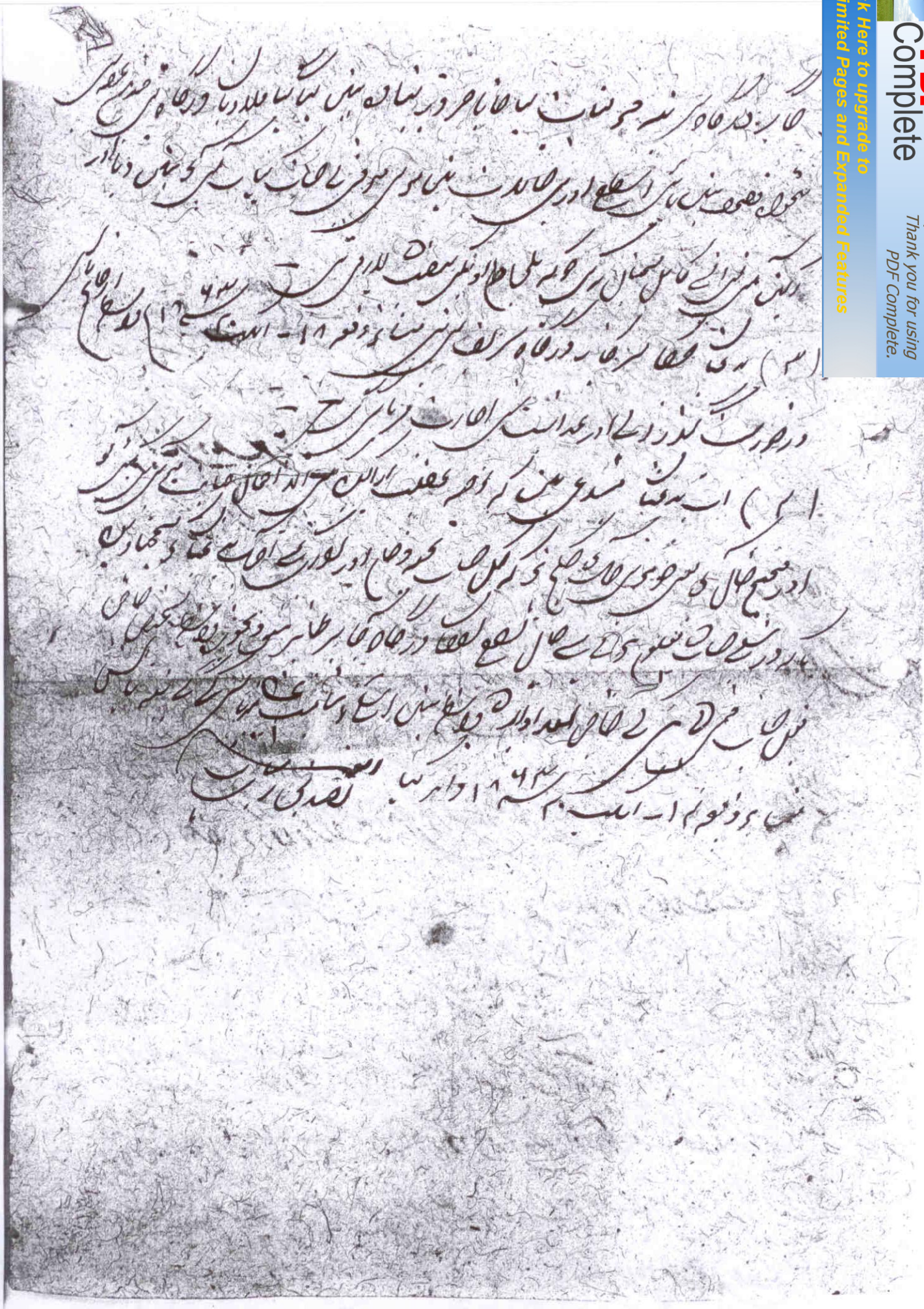

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

معمولات اور انتظام محفل [illegible] ملک [illegible]

۱ سب کام محفل کا موافق معمول کے ہوگا اور دستور قدیم سے ہو برابر
تفاوت و فرق طرف کسی فریق نہو دیگا

۲ ہر فریق کو کوئی امر جدید نکریں

۳ درج احکامات ہر ایک فریق ہو کہ جو جو ہمیشہ سے قاعدہ اور دستور
اور طریق ہر ایک ہر ایک فریق سے مقرری اوسکی بپاس مذہب
اور جائی ادب ہرگز فرق نکریں فقط

[illegible]

ہمہ [illegible] دیوان [illegible] خداوند [illegible] مجلس [illegible] اور [illegible]
محکل [illegible] المجلس [illegible] اور [illegible] قاضی [illegible] اور [illegible]
[illegible] علماء [illegible] واسطے [illegible] مولانا [illegible] نام
[illegible] موافق [illegible]

Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

[illegible]

Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features
PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.

Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features
PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.

Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features
PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.

بیان تحریری مورخہ ۱۱ - اکتوبر ۱۸۶۷ء

بعدالت حضور جناب جنرل اسسٹنٹ کمشنر صاحب بہادر ضلع [illegible] و مجسٹریٹ اول [illegible] ضلع [illegible]

منشی بولو مل سربراہ کار دیوان غیاث الدین علی خاں
سجادہ نشین و قاضی [illegible] الدین صاحب و [illegible] بر امام [illegible] و [illegible] پیرزادہ [illegible]
و [illegible] دیوان موصوف کے [illegible] درگاہ شریف [illegible]

[illegible] کہ [illegible] شبت [illegible] دعوی مدعیان سے انکار ہے

اول مدعیان نا جو دعوی غفلت ادا کی کہتے [illegible] جانب [illegible] درگاہ و [illegible]
[illegible] تحریر کرتے ہیں [illegible] درگاہ کا [illegible] بالکل غلط ہے -

دوم [illegible] واسطے تحصیلات حکم جمع [illegible] انتظام [illegible]
[illegible] صادر کی [illegible] تاریخ ۱۲ ماہ [illegible] ۱۸۶۷ء کو [illegible] صادر کیا اور بعد اوسکی کی احکامات
جاری کی [illegible] اوسکی [illegible] درگاہ [illegible] صاحب بہادر [illegible]
اور [illegible] درگاہ [illegible] اور [illegible]

سوم [illegible] صاحب بہادر [illegible] اور
اوس بعد تاریخ ۱۳ اپریل ۱۸۶۷ء کو جناب مسٹر [illegible] صاحب بہادر [illegible] حکم صادر فرمایا کہ
[illegible] تاریخ ۱۸۶۷ء [illegible] حفاظت مال [illegible]
ملازمان درگاہ [illegible] سے [illegible] ہوتا ہے [illegible]
[illegible] عدالت [illegible] عمل کریں

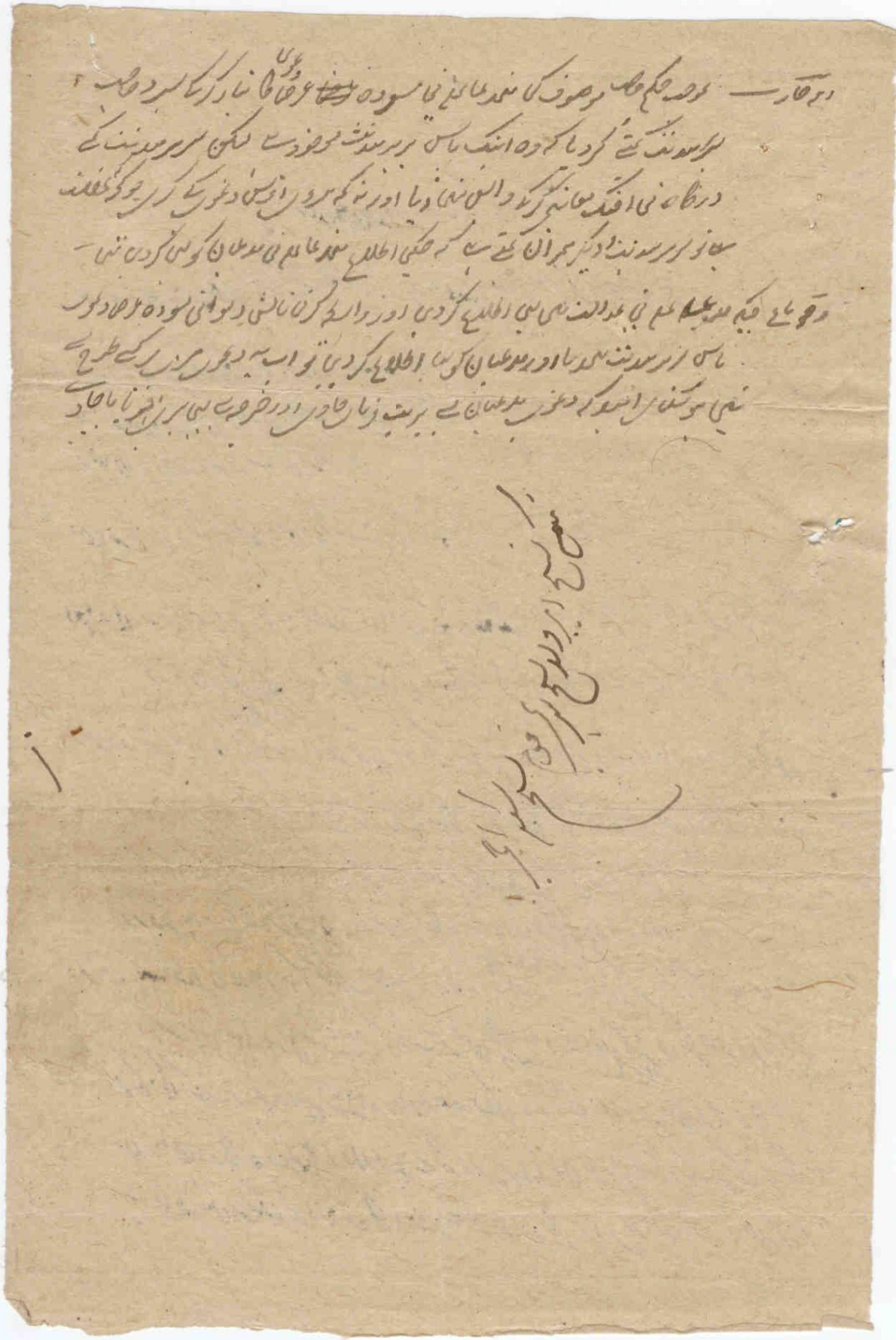

Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

دہر قادر — موجب حکم صاحب موصوف کا محمد علی خان نے مسودہ [illegible] وغیرہ کا [illegible] سر دفتر

سررشتہ تلنگ کے کردیا کہ وہ انتک ماس سر رشتہ موجود ہے لیکن سر رشتہ کے

درگاہ بی اتفاقیہ معائنہ گرد الیکن نہیں دیا اور نہ کہ سروی ان کا دفتر کی کرنی ہوگی کہ خلف

سعادت سر رشتہ دیگر ہمراہ ان یقین ہے کہ حکمی اطلاع محمد عالم کی محل ان کو نہیں کر دی تھی

وقوع بائے حکم [illegible] علم کا بعد الف نہیں یہ اطلاع کر دی اور وارث کو ناراضی دیوانی مسودہ کا [illegible]

ماس سر رشتہ محمد یار اور محمد علی خان کو اب اطلاع کر دیا تو اب [illegible] کسی طرح

نہیں ہو سکتی اس واسطے دفتر محمد علی خان سے [illegible] زبانی حاضر اور خرچ [illegible]

حسب الحکم [illegible]